१८. अनुसंधान-२: क्रियापूर्णता,आचरणपूर्णता

दिनांक -१३/१०/२०१२

विकास क्रम में रासायनिक-भौतिक संसार, विकास रूप में गठनपूर्णता है | जागृति क्रम में मानव, जीव चेतना से अच्छा जीने के लिये जिया है | जागृति रूप में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में प्रमाण है जिसमें से मानव चेतना के प्रमाण में क्रियापूर्णता सार्थक होता है | सम्पूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व रूप में प्रकटनशील विधि से,जीवन ही चैतन्य इकाई होना, जागृत चेतना विधिपूर्वक क्रियापूर्णता मानव चेतना के आधार पर घटित होना होता है | यही अवधारणा एवं बोध सहज महिमा ही है | अभी तक मानव जात केवल जीव चेतना में जीते हुए जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया है | अभी मानव चेतना में जीने के लिये शैक्षणिक विधि से प्रस्ताव प्रस्तुत है | जागृत चेतना विधि से मानव चेतना प्रमाणित होना एक अनिवार्य स्थिति है | मानव चेतना पूर्वक हर नर नारी समझदार होना चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से सम्भव हो गया है जो मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद विधि से स्पष्ट होता है | यह अध्ययन विधि से मानव सम्मुख प्रस्तुत हो चुका है | मानव अपने स्वेच्छा से इसे अध्ययन कर सकता है |

क्रियापूर्णता का तात्पर्य कर्तव्यों, दायित्वों का पूरा होना ही है | हर मानव के साथ कर्तव्य, दायित्व के रूप में ही जागृत चेतना विधि से सम्पन्न होना होता है | यही मुख्य बिन्दु है | मानव चेतना क्रम में एषणात्रय सहित उपकार करने की व्यवस्था रहती है | यही परिवार मानव है | यह विकसित चेतना सहज अवधारणा का द्योतक है | अवधारणाएं बुद्धि में ही संस्कार रूप में होना पाया जाता है | फलस्वरूप मानव नियम एवं धर्म के प्रीत प्रतिबद्ध हो जाता है | यही साक्षात्कार की पहचान है | इस विधि से जीवन ज्ञान सुलभ हो जाता है और मानव न्याय संगत विधि से आवेश मुक्त जीना होता है, अर्थात न्याय दृष्टि की पूर्ण क्रियाशीलता पाई जाती है | इनमें आवेश एवं विषमता समाप्त हो जाता है | मात्र सार्थकता रहता है | प्रिय हित लाभ का न्याय संगत होना ही इसका स्वरुप है | यही भ्रान्ताभ्रांत स्थिति ज्ञान का तात्पर्य भी है | भ्रान्ति का तात्पर्य बोध पूर्ण न होने से है | मानव चेतना में संक्रमण चेतना विकास मूल्य शिक्षा सहज अध्ययन अभ्यास पूर्वक सफल है | इस ढंग से सम-विषम आवेशों का मध्यस्थ सहज नियंत्रण होना ही सतर्कता एवं क्रियापूर्णता का तात्पर्य है |

जागृत चेतना विधि से देव मानव चेतना पूर्वक लोकेषणा सहित उपकार करने की व्यवस्था होती है | इसमें उपकार प्रधान हो जाता है | यह धर्म प्रधान दृष्टि पूर्वक जीते हैं, अर्थात धर्म दृष्टि की पूर्ण क्रियाशीलता हो जाता है | यह बोध पूर्णता की ही महिमा है | बुद्धि ही आत्मा सहज ज्ञान पूर्वक जागृति होता है | इसी का नाम पूर्ण बोध एवं निर्भ्रान्ति है | मध्यस्थ क्रिया सहज बोध एवं प्रकटन ही इनकी विशेषता है | यही पूर्ण चैतन्य भी है | इनमें क्रियापूर्णता पर अधिकार हो जाता है एवं उपकार की प्रधानता हो जाती है | यही समाज मानव का पहचान है | इस प्रकार मानवीयतापूर्ण मानव, देव मानव परम्परा विधि से परम्परा वैभवित होना ही जागृत चेतना का प्रमाण है |

यही क्रम से दिव्य मानव चेतना विधि से उपकार प्रधान हो जाता है | एषणाएं तृप्त हो जाती हैं | यह अस्तित्व में आत्मा सहज अनुभव की ही महिमा है | सत्यपूर्ण दृष्टि की क्रियाशीलता यही है | यही पूर्ण सजगता, जागृतिपूर्णता एवं गंतव्य है | अर्थात

आचरणपूर्णता एवं पूर्ण विश्राम है | सर्वश्रेष्ठ मानव का आकार दिव्य चेतना विधि से ही प्रमाणित होता है | अर्थात उपकार प्रधान विधि से जीना होता है | इसे निःस्वार्थ ज़िन्दगी कहा जाता है | यही विश्व मानव का स्वरुप है | यह सत्य दृष्टि प्रधान विधि से जीते हैं | अनुभव मूलक विधि से भी मानवीयता पूर्वक ही आचरण करना बनता है | अर्थात अनुभव मूलक विधि से मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के स्थिति गति को सन्दर्भ अनुसार प्रमाणित करना बन जाता है | यही विकसित चेतना के ज्ञान, आचरण एवं प्रमाण क्रम का तात्पर्य है |

इस विधि से जागृति क्रम में मानव चेतना विधि से एषणात्रय प्रधान उपकार, देव चेतना विधि से यश बल कामना प्रधान विधि से उपकार, दिव्य चेतना विधि से उपकार प्रधान एषणाएं देखा गया है | इस विधि से मानवीय परम्परा मानव चेतना अर्थात क्रियापूर्णता विधि से शुरुआत होते हुए दिव्य चेतना अर्थात आचरणपूर्णता रूप में प्रमाणित होना विकसित अर्थात जागृत चेतना का तात्पर्य है; क्योंकि जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ है | इसे ही विकसित चेतना का श्रृंखला कहा जाता है | मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर है | देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम है | इस विधि से विकसित चेतना क्रम में ये तीनों प्रकार के आचरण स्वाभाविक हैं | यही मानवत्व है | यह सब अनुभव मूलक विधि से सदा सदा के लिए प्रमाणित होना पाया गया है |

यथा मानवत्व, देवत्व, दिव्यत्व के साथ मानव ही लगता है | जैसा मानवत्व सहित मानव, देवत्व सहित मानव, दिव्यत्व सहित मानव | मानव ही विकसित चेतना स्वरूप में तीनों स्थितियों में गण्य होते हैं जिसमें अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था स्वयंस्फूर्त घटित होता है | यही अपराधमुक्त, भ्रममुक्त मानव परम्परा का स्वरूप है | मानव परम्परा में ही अर्थात जागृत मानव परम्परा में ही अखण्ड समाज होने, मानव जाति एक होने, मानव धर्म एक होने की व्यवस्था है | जबकि जीव चेतना विधि से अनेक धर्म होने, अनेक जातिके रूप में गण्य हो चुके हैं | यही समुदायों में बंटने का आधार है | हर समुदाय अपने को श्रेष्ठ मानता है | फलस्वरूप संघर्ष होना भावी रहा | जीवों से अच्छा जीते हुए मानव परम्परा अभी तक संघर्षमुक्त नहीं हो पाया है | भ्रम मुक्ति तो बहुत दूर है | भ्रम मुक्ति, अपराध मुक्ति, संघर्ष मुक्ति के विकल्प स्वरुप में ही विकसित चेतना का स्वरूप है | यही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना सम्पन्न होना है | चैतन्य प्रकृति के रूप में जीता हुआ मानव में ही विकसित चेतना का प्रकाशन भावी है | सहअस्तित्व स्वयं नित्य प्रभावी, नित्य प्रकटनशील होना ही इसका मूल सिद्धांत है | ये दोनों सिद्धांत सह-अस्तित्व सहज हैं | फलित रूप में संघर्षमुक्त एवं भ्रममुक्त होना सहज है | मानवत्व, देवत्व, दिव्यत्व केवल मानव परम्परा में ही प्रमाणित होता है | जीव परम्परा में वंशानुषंगी विधि से उपयोगिता, पूरकता ; प्राण अवस्था बीजानुषंगी विधि से उपयोगिता, पूरकता तथा पदार्थावस्था में परिणामानुषंगी विधि से पूरकत उपयोगिता प्रमाणित है |

मानव परम्परा ज्ञानानुषंगी विधि से अर्थात विकसित चेतना रुपी ज्ञान के साथ अपना उपयोगिता, पूरकता को प्रमाणित कर पाता है न कि जीव चेतना विधि से | जीव चेतना क्रम में मानव, पशु मानव, राक्षस मानव ही होता है | यही अल्प जागृति है | चेतना के क्रम में ही स्थितियां पाई जाती हैं | जीव मात्र अचेतन, मानव में ही अल्प, अर्ध एवं पूर्ण चेतन को पाया जाता है, जो क्रम से मानव में कल्पना, अवधारणा एवं बोध तथा अनुभव ही है| अनुभव ही जागृति परम है | जीवन ही ज्ञान पूर्वक जागृत अर्थात पूर्ण विकसित होता है और अनुभव पूर्वक जागृति पूर्ण होता है | यह सब चैतन्य जीवन सहज दृष्टा विधि से होता है | मन, व्यवहार का दृष्टा है | वृत्ति, मन का दृष्टा है | चित्त, वृत्ति का दृष्टा है | बुद्धि, चित्त का दृष्टा है | आत्मा, बुद्धि का दृष्टा है | यही नियम, न्याय, धर्म और सत्य है | यही चेतना सहज जागृति का क्रम है | इसे भली प्रकार से जाँच चुके हैं | हर व्यक्ति जाँच सकता है | हर व्यक्ति अपने स्वयंस्फूर्त प्रयास से ही जागृत होता है | शिक्षा विधि के पठन एवं अध्ययन दो भाग हैं | पठन परम्परा का अभ्यास जीव

चेतना क्रम में जीवों से अच्छा जीने के संदर्भ में प्रभावशील हो चुका है | अध्ययन करने का स्रोत, प्रयास, प्रक्रिया का अभाव रहा है | यही भ्रम एवं संघर्ष का कारण रहा है | इसके भरपाई के लिये ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव मानव सम्मुख प्रस्तुत है | मेरा विश्वास है, मानव अपराध एवं भ्रम मुक्त होना चाहता है | इस कारण से इस प्रस्तुत स्रोत को अपनाएगा ही | फल परिणाम रूप में भ्रममुक्त होना, अपराधमुक्त होना घटित होता है | इसी क्रम में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था फलित होता है |

मध्यस्थ क्रिया नियंत्रण सहज चैतन्य प्रकृति में क्रियापूर्णता, आत्मा में अनुभव सहज प्रमाण रूप में आचरणपूर्णता का प्रक्रिया, क्रिया एवं परिणाम इस अनुसन्धान का देन है | यह परम्परागत ज्ञान से उपलब्ध नहीं हुआ | परम्परा अनेक मत, वाद, विवाद, सम्प्रदाय, रहस्य में फस चुका है | इसीलिए यथार्थ की आवश्यकता है | यही विकल्प है | यह अनुभव बल सहज आप्त वाक्य है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत